शांतिवन। ब्रह्माकुमारी संस्था के शिक्षा प्रभाग तथा यशवन्त राव चौहान खुला विश्वविद्यालय महाराष्ट्र में शिक्षा में मूल्यों को बढ़ावा देने हेतु चल रहे एम.एस.सी. की पढ़ाई में उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए दीक्षांत समारोह का आयोजन शांतिवन में किया गया। संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर के साथ दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अन्नामलाई विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. एन रविचन्द्रन, यशवन्त राव चौहान खुला विश्वविद्यालय के सामाजिक एवं मानवीय स्कूल शिक्षा के निदेशक डॉ. उमेश राजदेरकर, प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय, कार्यक्रम के निदेशक डॉ. पांड्यामणि, शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा ब्र.कु. शीलू, डॉ. आर.पी. गुप्ता, ब्र.कु. सुमन तथा ब्र.कु. सुप्रिया। इसमें बड़ी संख्या में डिग्री प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों ने भाग लिया।

ज्ञान, कर्म, कर्ता और त्याग के भेद

- गतांक से आगे...

जो ज्ञान शरीर की आवश्यकताओं को पूर्ण करने तक सीमित है और उसे सब कुछ मानकर, सत्य को जाने बिगर उसमें लिप्त रहते हैं, वह तमोगुणी ज्ञान है। तो इस प्रकार से जहाँ व्यक्ति देह को देखता है, देह की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए सबकुछ करता है। ये सीमित ज्ञान हो जाता है और उसी को सत्य मानने लगता है। आत्मा रूप में वह नहीं देखता है। उसे तमोगुणी ज्ञान कहा जाता है।

इसी के साथ-साथ तीन प्रकार के कर्म बताए हैं। जिसमें सतोप्रधान कर्म कौन से हैं? जो यज्ञ कर्म है, आत्म शुद्धिकरण अर्थ कर्म और आसक्ति, राग-द्वेष से रहित कर्म फल की चाह के बिना किया जाता है, वह सात्विक कर्म है। राजसिक कर्म कौन से हैं? जो कर्म अपनी इच्छा पूर्ति के लिए परिश्रम युक्त, जहाँ मेहनत भी करता है इंसान और अहंकार युक्त है, उस अहंकार में आकर किसी को दुःख भी दे देता है। वह रजोगुणी कर्म है। जिस कर्म का परिणाम हानि हो और अपने सामर्थ्य को देखे बिना, विचारे बिना, मोह, अज्ञान वश किया गया कर्म वह तामसिक कर्म है। कई बार कई लोग परिणाम को सोचते नहीं हैं और कर लेते हैं। बिना विचारे, उसके परिणाम को सोचते भी नहीं हैं और फिर दुःखी होते हैं। तो ये कर्म तामसिक कर्म माना गया है। इस प्रकार से इन तीन कर्मों का भेद बताया है।

फिर कर्ता के तीन प्रकार के भेद का वर्णन किया गया है। जो व्यक्ति संग-दोष से मुक्त, अहंकार रहित, दृढ़ संकल्पधारी और उत्साह पूर्वक अपना कर्म करता है

-ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

और सफलता-असफलता में अविचलित रहता है, वह सात्विक कर्ता है। कर्तापन का जो भाव है उसमें व्यक्ति अहंकार से मुक्त, संगदोष से मुक्त और जो करता है दृढ़ संकल्प के आधार से करता है। क्योंकि दृढ़ता में ही सफलता है। उसे करने में भी उसको उत्साह होता है। वह सात्विक कर्ता है।

जो व्यक्ति कर्म और कर्मफल के प्रति आसक्त होकर फलों का भोग करना चाहता है, सदैव ईर्ष्या व लोभी है, अपवित्रता और सुख-दुःख से विचलित होता रहता है, वह राजसिक कर्ता है।

तीसरा जो कर्ता ज्ञान के विरूद्ध कार्य करता है अर्थात् समझ के विरूद्ध कार्य करता है, चंचल चित्त वृत्ति वाला है, असभ्य, घमण्डी, दूसरों के कार्य में बाधा पहुंचाने वाला, सदैव खिन्न, आलसी, दीर्घ सूत्री है, फिर कर लेंगे, बाद में कर लेंगे, देखा जायेगा ये कर्ता तामस कर्ता है।

ये जो तीन प्रकार के भेद, चाहे ज्ञान के भेद, चाहे कर्म के भेद, चाहे कर्ता के भेद या त्याग के भेद, ये सब बताते हैं कि हमारी जीवनशैली किस ओर आ रही है। ये जैसे एक प्रकार का सम्पूर्ण आईना भगवान ने हमारे सामने रखा है, जहां हम अपने आपको देखें कि हम कौन सी श्रेणी में चले जाते हैं। हम अपने आपमें परिवर्तन करना चाहें तो ये परिवर्तन भी संभव है। आईना जब सामने है तो परिवर्तन करना आसान हो जाता है। इस प्रकार से कर्ता की बुद्धि भी तीन प्रकार की है। तीन प्रकार की बुद्धि कौन सी है?

जो बुद्धि प्रवृत्ति और निवृत्ति, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य, भय और अभय तथा बंधन और मुक्ति को यथार्थ समझती है, वह बुद्धि सात्विक बुद्धि है। उसी के साथ जो बुद्धि धर्म और अधर्म, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के भेदों को यथावत नहीं जानती है, वह राजसी बुद्धि है। दुविधा की हालत में फंसे रहते हैं। ये करें, ये करें, ऐसा करें, वैसा करें, ऐसा नहीं करें वो राजसी बुद्धि है।

- क्रमशः

यह जीवन है....

दुःखी होना कोई नहीं चाहता, पर दुःख का वास्तविक कारण जाने बिना दुःख की निवृत्ति नहीं हो सकती। वह तो तभी सम्भव है, जब इसके मूल कारण को समझ कर निवारण का प्रयास किया जाये। कामनाओं का यह हाल है कि एक तृप्त नहीं होती कि दूसरी नई खड़ी हो जाती है। अगर दुःखों से निवारण चाहिए तो बहुमुखी जीवन से मुख मोड़कर, अन्तर्मुखी दृष्टि अपनायें।

तभी दुःखों से मुक्ति सम्भव है और तभी शांति।

ख्यालों के आईने में...

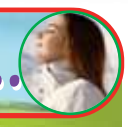

प्रशंसा चाहे कितनी भी करो, किन्तु अपमान बहुत ही सोच-समझकर करना चाहिए, क्योंकि अपमान वो ऋण है, जो हर कोई अवसर मिलने पर ब्याज सहित चुकाता अवश्य है।

अपनी मन-बुद्धि पर सम्पूर्ण नियंत्रण ही वास्तविक वीरता है। ज्ञान और ध्यान ही ऐसी वीरता को धारण करने का एकमात्र उपाय है।

सूरतगढ़-राज.। स्वामी विवेकानंद जयंती पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'सद्भावना दौड़' कार्यक्रम में शरीक हुए सी.आर.पी.एफ. के डी.आई.जी. गिरीश चावला, व्यापार मण्डल अध्यक्ष ललित सिदाना, शिक्षा समिति अध्यक्ष सरदार सरणपाल सिंह मान, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. अरुण तथा अन्य गणमान्य लोग।

व्यारा-गुज.। तनाव मुक्ति कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में चीफ फॉरेस्ट ऑफिसर सी.के. सोनवने, नायब फॉरेस्ट ऑफिसर आनंद कुमार, ब्र.कु. अरुणा तथा अन्य।

भिवानी-हरियाणा। 'गीता जयंति महोत्सव' में सिटी मजिस्ट्रेट डॉ. वेदप्रकाश को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुमित्रा।

कराखादी-गुज.। सेवाकेन्द्र में आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में मंचासीन हैं पादरा तालुका विधायक जशपाल सिंह, शहर कांग्रेस अध्यक्ष नरेन्द्र जी, कैरी डाइस कंपनी के एच.आर. हेड राकेश वर्मा, वडोदरा डेयरी के रिटायर्ड ऑफिसर उमेद जी, ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. सीमा तथा अन्य। कार्यक्रम में सभी का आभार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. नीरू।

नवांशहर-पंजाब। जिला शिक्षा अधिकारी कोमल चोपड़ा को ओमशान्ति मीडिया द्वारा हो रही सेवाओं की जानकारी देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. राम, ब्र.कु. पोखर तथा अन्य शिक्षकगण।

भादरा-राज.। गणतंत्र दिवस पर कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रकान्ता को सम्मानित करते हुए उपखंड अधिकारी तथा उपमजिस्ट्रेट।